अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2022) दिनांक : 17.12.2022

समय सीमा : 3 घंटा पंचम वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

संजया–25

प्र. 1 कोई पांच द्वार लिखें– 10

(क) परिहार विशुद्धि–काल द्वार।

(ख) यथाख्यात–प्रव्रज्या द्वार।

(ग) छेदोपस्थापनीय–गति स्थिति पदवी द्वार।

(घ) सूक्ष्म संपराय–सन्निकर्ष द्वार।

(ङ) सामायिक चारित्र–परिणाम द्वार।

(च) छेदोपस्थापनीय–आकर्ष द्वार।

(छ) छेदोपस्थापनीय–अंतर द्वार।

प्र. 2 किन्हीं छह प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 6

(क) सूक्ष्म संपराय में कितने कल्प पाये जाते हैं, नाम लिखें।

(ख) सामायिक चारित्र कितने क्षेत्र में पाया जा सकता है?

(ग) यावत्कथिक चारित्र कहा पाया जाता है?

(घ) आकर्ष किसे कहते हैं?

(ङ) संज्ञाएं किस कर्मोदय जनित है?

(च) भरत चक्रवर्ती के साथ कितनी दीक्षा का उल्लेख मिलता है?

(छ) लेश्या द्वार–परम शुक्ल लेख्या किसकी अपेक्षा से है?

प्र. 3 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 9

(क) सूक्ष्मसंपराय का अंतर द्वार लिखते हुए बताएं कि अनेक जीवों की अपेक्षा उत्कृष्ट अंतर किस प्रकार घटित होता है?

(ख) परिहार विशुद्धि का स्थिति द्वार लिखते हुए बताएं कि उत्कृष्ट के पीछे क्या अपेक्षा है?

(ग) सूक्ष्म संपराय का आकर्ष द्वार लिखते हुए बताएं कि अनेक भव की अपेक्षा से उत्कृष्ट आकर्ष की स्थिति के पीछे क्या अपेक्षा है?

(घ) छेदोपस्थापनीय चारित्र का उपसंपदहान द्वार लिखते हुए बताएं कि उस चारित्र को छोड़कर अन्य स्थानों में जाने के पीछे की क्या अपेक्षा है?

नियंठा–25

प्र. 4 कोई छह द्वार लिखें– 18

(क) स्नातक–काल द्वार।

(ख) बकुश–आकर्ष द्वार।

(ग) प्रतिसेवना–सन्निकर्ष द्वार।

(घ) कषायकुशील–अंतर द्वार।

(ङ) बकुश–परिणाम स्थिति द्वार।

(च) निर्ग्रंथ–प्रवज्या द्वार।

(छ) निर्ग्रंथ–स्थिति द्वार।

(ज) पुलाक–गति, स्थिति, पदवी द्वार।

प्र. 5 किन्हीं सात प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 7

(क) बकुश का कल्प द्वार लिखें।

(ख) लिंग प्रतिसेवना का क्या तात्पर्य है?

(ग) कौन सा निर्ग्रंथ लब्धि की स्थिति में काल नहीं कर सकता है?

(घ) कषायकुशील कितने कर्मों की उदीरणा करता है?

(ङ) भाव लिंग किसे कहते हैं?

(च) असबली शब्द का क्या तात्पर्य है?

(छ) कौन सा गुणस्थान संवेदी व अवेदी दोनों हैं?

(ज) लिंग पुलाक का क्या तात्पर्य है?

गीतिका (नियंठा दिग्दर्शन)–10

प्र. 6 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 2

(क) भगवान ने ज्ञाता सूत्र के दसवें अध्ययन में क्या कहा है?

(ख) भगवती के तेरहवें शतक के नवमें उद्देशक में कषाय कुशील के लिए क्या बतलाया है?

(ग) छठा गुणस्थान कब नहीं बदलता है?

प्र. 7 किन्हीं दो पद्यों को अर्थ सहित लिखें– 8

(क) सांभल न्याय.....जोय।

(ख) मासी चौमासी.....आलोय।

(ग) पडिसेवी मूल.....होय।

(घ) सम्यक्त थिर.....सोय।

पूर्ण कंठस्थ ज्ञान–40

प्र. 8 सभी प्रश्नों के उत्तर लिखें– 40

(क) पच्चीस बोल–चक्षुरिन्द्रिय के विषय ***अथवा*** वचन योग के भेद। 2

(ख) चतुर्भंगी–सत्रहवां बोल ***अथवा*** आठवां बोल। 3

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा–आठ से तेरह दण्डक ***अथवा*** सतरहवां बोल। 3

(घ) तत्त्व चर्चा–अधर्म पर चर्चा ***अथवा*** कर्मों पर छह द्रव्य नौ तत्त्व। 3

(ङ) कर्म प्रकृति–ज्ञानावरणीय कर्म भोगने के हेतु ***अथवा*** चारित्र मोह कर्म के लक्षण एवं कार्य का यंत्र बनाएं। 4

(च) जैन तत्त्व प्रवेश (प्रथम खण्ड)–दृष्टांत द्वार–आश्रव को लिखें ***अथवा*** सामान्य गुण के भेदों का वर्णन करें। 4

(छ) प्रतिक्रमण–क्षमा याचना सूत्र ***अथवा*** छट्ठा प्रत्याख्यान। 3

(ज) जैन तत्त्व प्रवेश (द्वितीय व तृतीय खण्ड) श्रावक गुण द्वार ***अथवा*** पुलाक निर्ग्रंथ से प्रारंभ करते हुए आगार व अनगार धर्म के विवरण तक। 4

(झ) इक्कीस द्वार–सम्यक् मिथ्या दृष्टि ***अथवा*** औपशमिक सम्यक्त्वी, पूरा बोल लिखें। 4

(ञ) बावन बोल–अठारह पाप स्थान का उदय, उपशम, क्षायिक क्षयोपशम निष्पन्न छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन? ***अथवा*** जीव पारिणामिक के दस भेद छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन? 3

(ट) लघु दण्डक–दृष्टि द्वार–सात नारकी से प्रारंभ कर अंत तक लिखें ***अथवा*** समुद्घात द्वार–सात नारकी से प्रारंभ कर अंत तक लिखें। 4

(ठ) पांच दान–दृष्टिवाद उपदेश व सम्यक् श्रुत किसे कहते हैं। ***अथवा*** अन्तगत मध्यगत की भिन्नता का वर्णन करें। 3